पराग 7

पाठ 1. मैं सुमन हूँ

पाठ का परिचय

यह आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई एक कविता है। कवि कहते हैं कि फूल का आवास खुले आसमान के नीचे होता है। गरमी, सरदी हो या बरसात उसे खुले में रहकर सब झेलना पड़ता है। वह तेज़ हवाओं की मार सहता है तथा दिन-रात काँटों के साथ रहता है फिर भी ज़िंदगी के खेल को हँसकर खेलता है तथा प्रसन्न रहता है। जो कोई फूल को तोड़ता है, वह उसे भी माफ़ कर हँसकर उसके गले का हार बन जाता है। वह राह में बिछाए जाने पर दुखी नहीं होता, न देवता पर चढ़ाए जाने पर अहंकार करता, दोनों ही स्थितियों में वह समता रखता है तथा सभी के लिए अपने मन में स्नेह रखता है। फूल कहता है कि वह यदि रूप का शृंगार करने के लिए प्रस्तुत रहता है तो शव का भी साथ देता है। आशाओं के सवेरे और निराशाओं के अँधेरे में वह सदा समान रूप से मुसकराया है। वास्तव में फूल की पूरी बात इसी तथ्य की पुष्टि करती है कि मनुष्य का व्यावहारिक संतुलन ही जीवन-कला का सौंदर्य है। उसी से जीवन का प्रत्येक पक्ष सुंदर और संतुलित बनाया जा सकता है।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

हमें अच्छे-बुरे समय में स्वयं को संतुलित रखना चाहिए। मुसकराते फूल इसका सबसे अच्छा उदाहरण हैं।

पाठ का वाचन

कविता का सस्वर गान करें। कविता की एक-एक पंक्ति पढ़कर बच्चों को उसका सरलार्थ समझाएँ। बच्चों से कविता कंठस्थ करने को कहें। बच्चे समूहगान के रूप में कविता का पाठ करें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्न प्रश्नों पर चर्चा करें –

- खुशी के समय तुम कैसा व्यवहार करते हो?
- दुख के समय कैसा व्यवहार करते हो?
- क्या किसी ऐसे इनसान को देखा है, जो दुख की बात पर भी दुखी न हो।
- कैसा लगेगा अगर तुम ये सीख सको कि कोई भी दुख तुम्हें दुखी न कर सके।